वेदों व पुराणों के
आधार पर

धार्मिक एकता की ज्योति

लेखक : डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय

वेदों व पुराणों के
आधार पर

धार्मिक एकता
की ज्योति

लेखक

डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय (एम. ए.)

- संस्कृत काव्य रचना प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेता
- संसकृत निबन्ध रचना प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेता (प्रयाग विश्वविद्यालय)
- अंतरविश्वविद्यालयीन संस्कृत वादविवाद प्रतियोगिता के रजतफलक विजेता (विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन)
- सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ संचालक
- संस्कृत विभागाध्यक्ष, पंजाब यूनिवर्सिटी

विषय-सूची

१. प्रस्तावना ४
२. एकेश्वरवाद ७
३. ईशदूतत्व की पुराण से पुष्टि ११
४. पुराणों में यीशु विषयक वर्णन १८
५. पुराणों और वेदों में महामद तथा 'अल्लाह' विषयक वर्णन २०
६. सार्वभौमधर्म एवं उपसंहार २३

प्रस्तावना

धर्म के सच्चे स्वरूप से अनभिज्ञ लोग अन्धे गुरु के अनुकरणकारी अन्धे शिष्य की भांति अन्धे कूप (नरक) में ही गिरते है, अतः गिरने से बचने के लिए धर्म के सत्य स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है । यह ज्ञान उपलब्ध कहाँ से होगा? धर्म के मूल स्रोतों से । ये स्रोत है ईश्वरीय वाणी का प्रतिपादन करने वाले पवित्र ग्रन्थ जो मन्त्रदृष्टा ऋषियों द्वारा ध्यान एवं आकाशवाणी से प्राप्त मन्त्रों के संग्रह है। प्रत्यक्ष एवं अनुमान से जिन पदार्थो का ज्ञान नहीं होता, उन्हें ईश्वरीय वाणी का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थों से जाना जाता है-वे ग्रन्थ है वेद, बाइबिल एवं कुरआन, जिन पर सनातन, ईसाई एवं इस्लाम धर्म आधारित है।

तीनों पवित्र एवं ईश्वरीय ग्रन्थ है, अतः तीनों में सिद्धान्ततः भी वैषम्य होना असम्भव है । वेद सर्व-प्राचीन एवं जगत् के सर्वप्रथम ग्रन्थ है, उनके बाद ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, तथा पुराणों की गणना होती है। ये ग्रन्थ आदम के पूर्ववर्ती देवर्षियों द्वारा लिखे गये थे । देवर्षि नारद-रचित भक्तिसूत्र आज भी उपलब्ध है । भविष्य-पुराण प्रतिसर्ग पर्व में व्यास जी सूत द्वारा वर्णित भावी वृत्तान्त (आदम एवं हव्यव्रती वृत्तान्त) को सुनाते है जिसका वर्णन आगे किया जायगा। आदम काल से पूर्व का चरित्र मानवेतर अर्थात् देवों तथा राक्षसों का चरित्र है, जिस पर मनुष्य की बुद्धि नहीं ठहरती और उन देव चरित्रों (राम, हनुमान, शंकर तथा कृष्णादि के चरित्रों) में मानवबुद्धि असंगति देखती है, जब कि देवों तथा असुरों के लिए ऐसे चरित्र सर्वथा सम्भव है । भविष्य में आदम की सन्तानों का पृथ्वी पर अधिकार होगा, यह जानकर अट्ठासी हजार ऋषि पहाड़ों में चले जाते है । इसकी पुष्टि भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व चतुर्थ अध्याय में आए हुए अधोलिखित श्लोकों से होती है —

'आर्यदेशा क्षीणवन्तो म्लेच्छवंशा बलान्विता ।
भविष्यन्ति भृगुश्रेष्ठ तस्माच्च तुहिनाचलम् ।
गत्वा विष्णुं समाराध्य गमिष्यामो हरेः पदम् ।
इति श्रुत्वा द्विजाः सर्वे नैमिषारण्यवासिनः ।
अष्टाशीति सहस्राणि गतास्ते तुहिनाचलम् ।'

भविष्य पुराण में आदम के बाद जो ईश दूतत्व की एक एकतान्ता उपलब्ध होती है, वही भविष्य में ठीक उसी प्रकार घटित हुई और परवर्ती धर्म ग्रन्थों बाईबिल एवं कुरआन से उस पर वृहत् प्रकाश पड़ा ।

बाइबिल एवं कुरआन में जो भी ईश दूतत्व के विषय में तर्णन हुआ वह व्यास जी द्वारा भावी आदम एवं हव्यवती वृत्तान्त के पहले ही व्यक्त कर दिया गया । 'मनः श्रृणु ततो गाथां, भावी सूतेन वर्णिताम। कलेर्युगस्य पूर्णा तां तच्छ्रुत्वा तृप्तिमावह'अर्थात 'हे मन, सूत द्वारा वर्णित भविष्य में होने वाली कलियुग की उस पूर्ण गाथा को सुनो और तृप्ति प्राप्त करो' इतना कहकर आदम और हव्यवती की कथा का प्रारम्भ करते है जो भविष्य में होगी । वेदों का एकेश्वरवाद, भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व में वर्णित ईशदूतत्व एवं न्यूह के समय जल-प्लावन का आना तथा आदम के पहले देवों और असुरों की सत्ता का होना और उनके २पारस्परिक युद्ध उनके लिये भी ईश्वरीष नियम का विधान तथा यज्ञादि करना ब्राह्मण ग्रन्थों से सिद्ध है जैसे देवताओं ने दर्श तथा पौर्णमास योगों द्वारा भी असुरों को मास के कृष्ण पक्षको छोड़ देने पर बाध्य किया था, जिस पर असुरों का अधिकार था (शब्रा०१.७.२, २२-४, तैब्रा० १. ५. ६. ३. ४) तथा देवताओं ने असुरों के तीन दुर्गों को, जो लोहा,चांदी और स्वर्ण के बने थे, उपसद् कृत्यों द्वारा ध्वस्त किया, (तैसं० ६. २. ३. १, मैसं० ३. ८. १, शब्रा० ३. ४. ४, ३. ५, कौ ब्रा० ८. ८,) । भविष्य पुराण में कहीं-कहीं इस्लाम धर्म के लिए 'नैगम धर्मम' (वैदिक धर्म) कहा गया है । भविष्य पुराण में जहां ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म को म्लेच्छ धर्म कहा गया है, वहीं पर 'म्लेच्छ'

शब्द का अर्थ भी समझाया है ।

आचारश्य विवेकश्च द्विजता देवपूजनम् ।
कृतान्येतानि तेनैव तस्मान्म्लेच्छः स्मृतो बुधैः ॥
विष्णुभक्त्यग्नि पूजा च ह्यहिंसा च तपो दमः ।
धर्माण्येतानि मुनिभिर्म्लेच्छानां हि स्मृतानि वै ॥'

सदाचार, ऊर्ध्व ज्ञान, ब्राह्मणत्व, देवपूजन (दिव्य परमात्मा की पूजा) 'हनूक' नामक ईश दूत के द्वारा किये गये इसी से उसे विद्वानों ने म्लेच्छ कहा। विष्णु की भक्ति, प्रकाशक परमात्मा की पूजा, अहिंसा, तपस्या, इन्द्रियदमन ये धर्म मुनियों ने म्लेच्छों के बताए है।

अब हम वेदों का एकेश्वरवाद एवं पुराणों में वर्णित ईशदूतत्व तथा सार्वभौम धर्म का प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत करेंगे —

लेखक - पं० वेद प्रकाश उपाध्याय,
एम०ए० (संस्कृत - वेद)

एकेश्वर वाद

चराचर जगत में चैतन्य रूप से व्याप्त ईश्वर की सत्ता का वर्णन ऋग्वेद में अनेक रूपों में प्राप्त होता है। कुछ वेदविशारदों ने अनेक देववाद का प्रतिपादन करके ऋग्वेद को अनेकदेववादी बना दिया है और कुछ लोग ऋग्वेद में उपलब्ध अनेक रूपों में अनेक नाम एवं उन नामों के गुणों का अवलोकन करके अनेक सर्वोत्कृष्ट देवताओं की कल्पना करते है। यह केवल ऋग्वेद का पूर्णतया अनुशीलन न करने पर होता है । वास्तव में सत्ता एक ही है, जिसका अनेक सूक्तों में अनेकधा वर्णन प्राप्त होता है ।

इन्द, मित्र, वरूण, अग्नि, गरूत्मान, यम और मातारिश्वा आदि नामों से एक ही सत्ता का वर्णन ब्राह्मनियों द्वारा अनेक प्रकार से किया गया है :-

''इन्दं मित्रं वरूणामग्निमाहुरथे दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः ॥''

(ऋग्वेद मंडल १०/सूक्त ११४ /मन्त्र५)

वेदान्त में कहा गया है कि **'एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति, नेह नानास्ति किञ्चन्' अर्थात परमेश्वर एक है, उसके अतिरिक्त दूसरा नहीं।**

परमेश्वर प्रकाशकों का प्रकाशक, सज्जनों की इच्छा पूर्ण करने वाला, स्वामी, विष्णु (व्यापक), बहुतों से स्तुत, नमस्करणीय, मन्त्रों का स्वामी, धनवान, ब्रह्मा (सबसे बड़ा), विविध पदार्थो का सृष्टा तथा विभिन्न बुद्धियों में रहने वाला है,-जैसा कि ऋग्वेद २/१/३ से पुष्ट होता है —

''त्वमग्ने इन्द्रो वृषभः सतामसि, त्वं विष्णुरूरूगायो नमस्यः।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणास्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ॥''

अधोलिखित मन्त्र में परमेश्वर को द्युलोक का रक्षक, शंकर मरूतों केवल का आधार, अन्नदाता, तेजस्वी, वायु के माध्यम से सर्वत्रगामी, कल्याणकारी, पूषा (पोषण करने वाला) पूजा करने वाले की रक्षा करने वाला कहा गया है —

''त्वमग्ने रूद्रो असुरो महोदिवस्त्वं शर्धो मारूतं पृक्ष ईशिषे।
त्वं वातैररूणैर्यासि शंगयस्त्वं पूषा विधतः पासि नुत्मना ॥''
(ऋग्वेद मं २/सू०१/मं० ६)

परमेश्वर स्तोता को धन देन वाला है, रत्न धारण करने वाला सविता (प्रेरक) देव है । वह मनुष्यों का पालन करने वाला, भजनीय, धनों का स्वामी, घर में पूजा करने वाले की रक्षा करने वाला है । इसके प्रमाण में ऋग्वेद मंडल २ सू० १, मं० ७ प्रस्तुत है —

''त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि।
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस्तेऽविधत् ॥''

इस मन्त्र में प्रयुक्त 'अग्नि' शब्द 'अंज' (प्रकाशित होना) + दह् (प्रकाशित होना) + नी (ले जाना) + क्विप् प्रत्यय से निष्पन्न हो कर प्रकाशक परमेशवर का अर्थ निष्पादक है । 'नृपति' शब्द नृ (मनुष्य) + पा (रक्षा करना) + 'डति' प्रत्यय से बनकर 'मनुष्यों का पालक अर्थ देता है । इसी प्रकार प्रेरणार्थक 'सु' धातु में तृन् प्रत्ययान्त 'सु' प्रत्यय से प्रेरक अर्थ 'सविता' शब्द से निष्पादित

होता है ।

सभी के मन में प्रविष्ट होकर जो सब के अन्तःकरण की बात जानता है, वह सत्ता ईश्वर एक ही है । इसका प्रतिपादन अथर्ववेद (१०/८/२८) में 'एको ह देवों मनसि प्रविष्टः; कथन से किया गया है ।

ऋग्वेद में प्रतिपादित 'एकं सत्' के विषय में कृष्ण यजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद् (६-२१) में वृहत् विवेचन किया गया है- वह एक है, सभी प्राणियों का अन्तर्यामी परमात्मा है, सभी प्राणियों के अन्दर व्याप्त है, सर्वव्यापक है, कर्मों का अधिष्ठाता है, सभी का आश्रय है, साक्षी है, चेतन है तथा गुणातीत है —

"एकोदेवः सर्वभूतेषु गुढ़ः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः, साक्षी चेताकेवलो निर्गुणश्च ॥"

(—श्वेता० अध्याय ६, मं० ११)

उस ब्रह्म के विषय में कुछ लोग कहते है कि वह है, कुछ लोग कहते है कि वह नहीं है, वही अपने अरि की सम्पदाओं को विजयी की तरह विनष्ट करता है । उसके अरि वही है जो उसे नहीं मानते । इस बात का प्रतिपादन ऋग्वेद मं० २, सू० १२ मं० ५ में हुआ है —

यच्छोत्रेण न श्रृणोति येन श्रोत्रमिंद श्रुतम् ।
तदेव ब्रह्म त्वं बिद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥

(उपनिषद)

जो कान से नहीं सुनता अपितु जिसके कारण सुनने की शक्ति है,

उसी को ब्रह्म समझो, वह ब्रह्म नहीं है जिसकी उपासना करते हो।

''यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोर, मुतेमाहुनैषो असतीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीविज इवामिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द ॥''

वह परमात्मा समृद्ध का, दरिद्र का याचना करते हुए मन्त्र स्तोता का प्रेरक है। उसी की कृपा से धन मिलता है, उसी के कोप से मनुष्य अपनी समृद्धियों से हीन होता है।

डगमगाती हुई पृथ्वी को एवं चंचल पर्वतों को स्थिर करने वाला, विस्तृत अन्तरिक्ष को निर्मित करने वाला तथा द्युलोक का स्तम्भन करने वाला परमेश्वर है । इसके प्रमाण में ऋग्वेद मं० २ सू० २१ मं० २ प्रस्तुत है –

''यः पृथिवी व्यथामनामदं हद् यःपर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णाव् ।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्दः ॥''

ऋग्वेद में अग्निसूक्त, इन्द्र सूक्त, वरूण सूक्त, यम सूक्त, विष्णु सूक्त विष आदि में जिस सत्ता की महिमा का गुणगान हुआ है वही सत्ता ईश्वर है । उस का ग्रहण लोग अनेक प्रकार से करते है । कोई उसे शिव मानता है, कोई शक्ति,कोई ब्रह्म कोई उसे बुद्ध मानता है, कोई उसे कर्त्ता कोई उसे अर्हत् मानता है, कोई कर्म के रूप में मानता है । एक को अनेक रूपों में भिन्न - भिन्न मानना सबसे बड़ा विभेद है, और ऐसा करना वेदों के अर्थ का अनर्थ करना है तथा यह आर्य धर्म के विरूद्ध है । देवी हो या देव, नर हो या नारी अच्छा हो या बुरा चराचर जगत् में चेतनता रूप में ईश्वर जगत् में व्याप्त न हो तो जगत् का क्रिया -कलाप ही स्थगित हो जाय । जो मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण का है, एवं विकारों से रहित है, उसके अन्दर उस परमानदमयी सत्ता का प्रकाश रहता है । इसलिए उस ईश्वर २को कण-कण में अनुभव करना चाहिए एवं सदाचार और एक निष्ठा से उसे प्राप्त करने का प्रयत्न भी करना चाहिये ।

ईशदूतत्व की पुराण से पुष्टि

मन्त्रों के साक्षात्कार करने वाले ऋषि कहे जाते है। (अल्पभाषी एवं ससांर से उदासीन रहकर उन्हें तत्वदर्शिता प्राप्त होती है।) ऋषियों ने मन्त्रों को बनाया नहीं , अपितु इन्हें परमेश्वर से प्राप्त किया। यदि किसी को इसमें अविश्वास हो , तो वेदों के मन्त्र की तुलना में कोई अन्य मन्त्र बना दे। ईश्वरीय वाणी का प्रतिपादन करने वाले जितने भी ग्रन्थ है उनकी तुलना में ग्रन्थों की रचना मनुष्य के बुद्धि की बात नहीं अपितु वह ईश्वरीय अनुकम्पा के फलस्वरुप ही प्राप्त हो सकती है । इस प्रकार वेद बाइबिल एवं कुरआन की तुलना में अन्य ग्रन्थ नहीं बन सकते है। (और इन्हीं का वृहद् विवेचन पुराण है।)

भविष्य पुराण में वेदव्यास जी नारायण वर्णित आदम और हव्यवती वृन्तान्त इस प्रकार है –

आदमो नाम पुरुषः पत्नी हव्यवती स्मृता ।
विष्णुकर्दमतो जातो म्लेच्छवंशप्रवर्धनौ ।।
द्विशताष्टसहस्त्रे द्वे शेषे तु द्वापरे युगे।
म्लेच्छदेशस्य या भूमिर्भविता कीर्तिमालिनी।।
इन्द्रियाणि दमित्वा यो ह्यात्मध्यान परायणः।
तस्मादादमनामासों पत्नी हव्यवती स्मृता।।
प्रदाननगरस्यैव पूर्वभागे महावनम् ।
इश्वरेण कृतं रम्यं चतुः क्रोशायंत स्मृतम् ।।
पापवृक्षतले गत्वा पत्नीदर्शनतत्परः।

कलिस्तत्रागतस्तूर्ण सर्परुपं हि तत्कृतम् ।।
वंचिता तेन धूर्तेन विष्णवाज्ञा भगंतां गता।
खादित्वा तत्फलं रम्यं लोकमार्गप्रदं पतिः।।
उदुम्बरस्थ पत्रैश्च ताम्यां वाय्वशनं कृतम।
सुताः पुत्रास्ततो जाताः सर्वे म्लेच्छा वभूविरे।।
त्रिशोत्तरं नवशतं तस्यायुः परिकीर्तितम् ।
फलानां हवनं कुर्वन्पत्न्या सह दिवं गतः।।

(भविष्य व य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय)

द्वापर युग में दो हज़ार आठ सौ दो वर्ष शेष रहने पर म्लेच्छ देश की जो भूमि है वह यशस्विनी हो जाएगी। इन्दियों का दमन करके परमात्मा के ध्यान में परायण होने के कारण म्लेच्छों के वंशवर्धक आदम तथा हव्यवती (भोगों से युक्त) विष्णु की गीली मिट्टी से उत्पन्न होंगे। (स्वर्ग) प्रदाननगर के पूर्वी भाग में परमेश्वर द्वारा बनाया गया सुन्दर चार कोश के क्षेत्र का बहुत बड़ा वन था। पापवृक्ष के नीचे जाकर पत्नी को देखने की उत्कण्ठा से आदम हव्यवती के पास गये तभी सर्प का रुप बनाकर वहाँ कलि शीघ्र आया। उस धूर्त के द्वारा आदम और हव्यवती ठग लिए गए और विष्णु की आज्ञा को भंग कर दिया तथा संसार का मार्ग के पास गए। तभी सर्प का रूप बनाकर वहां कलिशीघ्र आया। उस धूर्त के द्वरा आदम और हव्यवती प्रदान करने वाले उस फल को पति ने खा लिया। उन दोनों के द्वारा गूलर के पत्तों से वायु का आहार किया गया, तब उन दोनों से बहुत सी सन्ताने उत्पन्न हुई, सब म्लेच्छ कहे गये। आदम की आयु नौ सौ तीस वर्ष हुई।) फलों का हवन करते हुये पत्नी के साथ आदम स्वर्ग चले गये।'

इस प्रकार आदम और हव्यवती के वृत्तान्त की समाप्ति के बाद उसी

में परवर्ती ईशदूतों को वर्णन बड़े ही मनोरम ढंग से हुआ है। वह इस प्रकार है -

तस्माज्जातः सुतः श्रेष्टः श्वेतनामेति यिश्रुतः।
द्वादशोत्तरयर्ष च तस्यायुः परिकीर्तितम।।
अनुहस्तस्य तनयः शतहीनं कृतं पदम।
कीनाशस्तस्यतनयः पितामहसमं पदम।।
महल्ललस्तस्य सुतः पंचहीनं शतं नय।
तेन राज्यं कृतं तत्र तस्मान्मानगरं स्मृतम।।
तस्माच्च विरदो जातो राज्यं षष्ट् युत्तरं समाः।
ज्ञेयं नवशतं तस्य. स्यनाम्ना नगरं स्मतम।।
हनूकस्तस्य तनयो विष्णुभक्तिपरायणः।
फलानां हवनं कुर्वन् 'तत्व ह्यसि' जयन सदा।।
त्रिशतं पंचषष्टिश्च राज्यं वर्षाणि तत्स्मतम।
सदेहः स्वर्गमायातो म्लेच्छधर्मपरायणः।।
मतोच्छिलस्तस्य सुतो हनूकस्यैव भार्गव।
राज्यं नवशतं तस्य सप्ततिश्च स्मृताः समाः।।
लोमकस्तस्य तनयो राज्यं सप्तशतं समाः।
सप्तसप्ततिरेवास्य तत्पश्चात्स्वर्गतिं गतः।

'आदम से श्रेष्ठ सन्तान हुई जो श्वेत नाम से विख्यत हुई, उसकी आयु नौ सौ बारह वर्ष हुई। उसका तनय अनुह हुआ जो (ईश्वर दूतत्व के) पद को सौ वर्ष से कम समय तक धारण किया। उसका तनय कीनाश हुआ, जो पितामह (बाबा) के सम्मान पद धारण किया। उसका पुत्र महल्लल हुआ जिसने आठ सौ पंचानवे वर्ष तक राज्य किया, उनसे मानगर बना। उससे विरद हुए, जिसने नौ

सौ आठ वर्ष तक राज्य किया, उसके अपने नाम से नगर बने। उसका पुत्र हनूक विष्णु भक्ति में परायण हो गया। फलों का हवन करते हुए 'तत्वमसि' पर विवेक किया। उसका राज्य तीन सौ पैसठ वर्ष तक रहा। म्लेच्छ धर्म में परायण होकर वह संदेह स्वर्ग को आया। हे भार्गव। उस हनूक का पुत्र मतोच्छिल हुआ उसका राज्य नौ सौ सत्तर वर्ष रहा। उसका पुत्र लोमक हुआ, राज्य उसका सात सौ सतहत्तर (७७७) वर्ष तक रहा, उसके बाद स्वर्ग को चला गया। इसी कथा का आगे वर्णन इस प्रकार है-

तस्माज्जत : सुतो न्यूहो निर्गतस्तूह एव सः।
तस्मान्यूहः स्मृतः प्राज्ञैः राज्यं पञ् चशतंकृतम।।
सीमः शमश्च भावश्च त्रय पुत्रा बभूविरे।
न्यूहः स्मृतो विष्णु भक्तस्सोऽहंध्यानपरायणः।।
एकदा भगवान विष्णुस्तंत्स्वप्ने तु समागतः।
वत्स न्यूह श्रृणुष्वेदं प्रलयः सप्तमेऽहनि।
भविता त्वं जनैस्सार्द्ध नावमारुह्य सत्वरम।
जीवनं कुरु भक्तेन्द्र सर्वश्रेष्ठो भविष्यसि।।
तथेति मत्वा स मुनिर्नावं कृत्वा सुपुष्ठिताम।
हस्तत्रिशतलम्बां च पञ् चाशद्धस्तविस्तृताम।।
त्रिशद्वस्तोच्छ्रतां रम्यां सर्वजीवसमन्विताम।
आरुह्य स्वकुलैस्सार्द्ध विष्णुध्यानपरोऽभवत् ।।

उससे न्यूह नामक पत्र हुआ। उसने पांच सौ वर्ष तक राज्य किया। उसके सीम, शम और भाव तीन पुत्र हुए, विष्णु का भक्त न्यूह 'सोऽहमस्मि' ध्यान में परायण था। एक बार भगवान विष्णु ने उसे स्वप्न में बताया कि हे प्रिय

न्यूह सुनो सातवें दिन प्रलय होगी। तुम लोगों के साथ नाव में शीघ्र बैठ जाना, हे भक्तेन्द्र, अपना जीवन बचाओ, तुम सर्वश्रेष्ठ हो जाओगे। वैसा स्वीकार करके उस मुनि ने तीन सौ हाथ लम्बी और पचास हाथ चौड़ी नाव का निर्माण कराया तीस सौ हाथ ऊपर उठी हुई (ऊँची) सुन्दर सभी जीवों के जोड़े तथा अपने कुल वालों के साथ चढ़कर विष्णु के ध्यान में तत्पर हो गया।

यहाँ महा जल प्लावन की भीषणता का वर्णन इस प्रकार किया गया है —

सांवर्तको मेघगणो महेन्द्रेण समन्वितः।
चत्वारिंशद्दिनान्येव महावृष्टिमकारयत॥
सर्वं तु भारतं वर्षं जलैः प्लाव्य तु सिन्धवः।
चत्वारो मिलितः सर्वे विशालायां न चागताः॥
अष्टशीति सहस्राणि? (सहर्वाणि) मुनयो ब्रह्मवादिनः।
न्यूहश्च स्वकुलेस्सार्द्धं शेषाः सर्वे विनाशिता॥
यदा तु मुनयस्सर्वे विष्णुमाणां प्रतुष्टुवुः।
न्यूहस्तब्रस्थितो नावमारुह्य स्वकुलैस्सह।
जलान्ते भूमिमागत्य तत्र वासं करोति सः॥
सिमश्च हामश्च तथा याकूतो नाम विश्रुतः।
याकूतः सप्तपुत्रश्च जुम्रो माजूज एवं सः॥
मादी तथा च यूनानस्तूवलो मसकस्तथा।
तीरासश्च तथा तेषां नामभिर्देश उच्यते॥
जुम्रा दश कनाब्जश्च रिफतश्च तजर्रुमः।
तद्याम्न च स्मृता देशा यूनाद्या ये सुताः स्मृताः॥
इलीशस्तरलीशश्च कित्तीहूदानिरुच्यते।

सांवर्तक नाम मेघों के गणने इन्द्र से युक्त होकर (चालीस दिनों तक महान वृष्टि की। सम्पूर्ण भारतवर्ष जल से डूब गया, और चार समुद्र मिल गए और विशाल हो गए। अट्ठासी हजार? (सहर्ष) ब्रह्मवादी मुनि न्यूह अपने कुलों के साथ जल के अन्त होने पर वहां वास करने लगा। न्यूह के पुत्र सिम हाम, याकूत नाम से प्रसिद्ध हुए।) याकूत के सात पुत्र हुए-जुम्र, माजूज, मादी, यूनान, तूवल, मसक तथा तीरास। उन्हीं के नामों से देश कहे जाते है। जुम्र के बाद १० हुए-कनाब्ज, रिफत, तजर्रुम-इनके नाम से देश बने जो यूनादि पुत्र हुए। इलीश तरलीश, किती, हूदानि कहे जाते हैं।

चतुर्भिर्नामभिर्देशास्तेषां तेषां प्रचक्रिरे।
द्वितीयतनयाद्धामात्सुनाश्चत्वार एवं ते।
कुशो मिश्रश्च कूजश्च कनआँस्तत्र नाममिः।।
तथा सवतिका नाम निमरुहो महाबलः।
तेषां पुत्राश्च कलनः सिनारोरक उच्यते।।
अक्वदो बावुनश्चैव रसनादेशकाश्चते।
श्रावयित्वा मुनीम् सूतो योगनिद्रा वशागंतः।।

इन चारः के नाम से देश कहे जाते है। द्वितीय पुत्र हाम से चार पुत्र हुए-कुश, मित्र कूज तथा कनआन् । इनसे म्लेच्छों के प्रसिद्ध देश हैं। कुश के छः पुत्र हुए — हबील, सर्वतोरग, सवतिका, निमरूह, कलन और सिनारोरक कहे जाते है। इसके अतिरिक्त अक्वद, बाबुन और रसनादेशकादि। इस प्रकार सूत जी मुनियों को सुनाकर योगनिद्रा के वशीभूत हुए।

द्विसहस्त्रे शताब्द न्ते बुद्धा पुनरथाब्रवीत् ।
सिमवंशं प्रवक्ष्यामि सिमो ज्येष्ठः स भूपति।
राज्यं पञ्चशतं वर्ष तेन म्लेच्छेन सत्कृतम् ।।

अर्कसदरतस्य सुतश्चतुस्त्रिशच्च राज्यकम।।
चतुश्शतं पुनज्ञे यं सिल्हास्तत्तनयोऽभवत्।
राज्यं तस्य स्मृतं तत्र षष्ट् युत्तरचतुः शतम्।।
इब्रतस्य सुतोज्ञेय यः पितुस्तुल्यं कृतं पदम्।
कलजतस्य तनयः चत्वारि शंदद्वयं शतम्।।
राज्यं कृतंतु तस्माच्च रऊनाम सुतः स्मृतः।
सप्तत्रिशंच्च द्विशतं तस्य राज्यं प्रकीर्तितम्।।
तस्माच्च जूज उत्पन्नः पितुस्तुल्यं कृतं पदम्।
नहूरस्तस्य तनयो वयः षष्टयुत्तरं शतम्।।
राज्य चकार नृपतिर्बहुशत्रून् दिहिंसयन्।
ताहरस्तस्य तनयः पितुस्तुल्यं कृतं पदम्।।
तस्मात्पुत्रोऽविरामच्श्र नहूरो हारनस्त्रयः।
एवं ऐषां स्मृता वंशा नाममात्रेण कीर्तिताः।।

दो हज़ार एक सौ वर्ष बीतने पर जागकर फिर बोले सिम के वंश को बताऊंगा। ज्येष्ठ पुत्र सिम राजा हुआ, उस म्लेच्छ ने पांच सौ वर्ष तक राज्य किया। उसका पुत्र अर्कसद जिसने चार सौ चौंतीस वर्ष राज्य किया, फिर सिंह उनका पुत्र हुआ, जिसने चार सौ साठ वर्ष तक राज्य किया। इब्रत के पुत्र ने भी पिता के तुल्य पद को शोभित किया, उसके पुत्र ने दो सौ चालीस वर्ष तक राज्य किया। इसी से रऊ नामक पुत्र हुआ। रऊ ने दो सैंतीस वर्ष तक राज्य किया, उससे जूज़ उत्पन्न हुआ, उसने भी पिता के समान पद को शोभित किया। उसका पुत्र नहूर हुआ, जिसने एक सौ आठ वर्ष राज्य किया और बहुत से शत्रुओं का संहार किया। उसका पुत्र ताहर हुआ जिसने पिता के–सम्मान पद को शोभित किया। उसके पुत्र तीन-अविराम, नहूर, और हारन, इस प्रकार म्लेच्छवंश के गुरु होंगे। और बाद में भारत के राजाओं (शकराज और भोज) ने समय-समय पर जाकर क्रमशः ईशामसीह और महाम्मद जी से धर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।

(भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय)

पुराणों में यीशु विषयक वर्णन

इब्राहीम (अबिराम) का विवरण होने के बाद यीशू का वर्णन भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खन्ड, द्वितीय अध्याय में इस प्रकार किया गया है—

एकदा तु शकाधीशो हिमतुगं समाययौ। २१
हूणादेशस्य मध्ये वै गिरिस्थं पुरुषं शुभम् ।।
ददर्श बलवान् राजा गौरागं श्वेतवस्त्रकम्।। २२
को भवानिति तं प्राह स होवाच मुदान्वितः।
(ईशं पुत्रम' पाठभेद) ईशपुत्र च मांविद्धि कुमारीगर्धसम्भवम।।२३
म्लेच्छधर्मस्य वक्तारं सत्यवृतपरायणम।
इति श्रुत्वा नृपः प्राह धर्मः को भवतः मतः।। २४

एक बार शाकाधीश हिमतुंग पर गए और हूण देश के मध्य पर्वत में स्थित गोरे अंग वाले, श्वेत वस्त्र पहनने वाले शुभ पुरुष को बलवान् राजा ने देखा और आनन्दित होकर पूछा कि आप कौन है? उन्होंने कहा कि मुझे कुमारी के गर्भ से उत्पन्न ईशा समझें; मै सत्य के व्रत में परायण म्लेच्छधर्म का उपदेशक हूं।' ऐसा सुनकर राजा ने पूछा कि धर्म में आपका क्या विचार है।

श्रुत्वोवाच महाराज प्राप्ते सत्यस्य संक्षये।
निर्मार्यादे म्लेच्छदेशे मसीहोऽह समागतः।।२५
ईशामसी च दस्यूनां प्रादुर्भूता भयकंरी।

तामहं म्लेच्छतः प्राप्य मसीहत्वमुपागतः ॥२६
म्लेच्छेषु स्थापितो धर्मो मया तच्छणु भूपते
मानसंनिर्मलं कृत्वा मलं देंहे शुभाशुभम।२७
नैगम जपमास्थाय जपेत निर्मलं परम।
न्यायेन सत्यवचसा मनसैक्येन मानवः॥२८
ध्यानेन पूजयेदीशं सूर्यमन्डलसंस्थितम।
अचलोऽयं प्रभुः साक्षात्तथा सूर्योऽचलःसदा॥२९
ईशमूतिहृर्लदि प्राप्ता नित्यशुद्धा शिवकंरी।
ईशामसीह इति च मन नाम प्रतिष्ठितम॥३०
इति श्रुत्वा स भूपालो नत्वा तं मलेच्छपूजकम।
स्थापयामास तं तत्र म्लेच्छस्थाने हि दारुणे॥३१
(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड द्वितीय अध्याय)

यह सुनकर ईशामसीह बोले कि सत्य के नष्ट हो जाने पर म्लेच्छ देश के मर्यादाहीन होने पर मैं मसीह यहां आया हूँ। दस्युओ की भयकारिणी विपत्ति को म्लेच्छों से प्राप्त करके मैं मसीहत्व को प्राप्त हुआ हूँ। हे राजन् मेरे द्वारा म्लेच्छों में स्थापित धर्म को सुनो-स्नान करो या नहीं, मन को निर्मल करके वैदिक जप को आश्रित करके निर्मल होकर जपे। न्याय सत्यवचन और मन को एकता से मनुष्य ध्यान से सूर्यमण्डल में स्थित ईश्वर को ध्यान से पूजे। यह प्रभु अचल है जैसे कि सूर्य अचल है। ईश्वर के हृदय में नित्य शुद्ध तथा कल्याणकारी मूर्ति प्राप्त होती है, इसलिए ईशामसीह मेरा नाम है। यह सुनकर राजा ने उस म्लेच्छपूजक को वहीं दारुण म्लेच्छ स्थान में स्थापित किया तथा मुहम्मद साहब को (म्लेच्छपूजक को) भविष्य में आने की सूचना भी ईशा ने राजा से दी है।

पुराणों और वेदों में महामद तथा "अल्ला" विषयक वर्णन

अन्तिम ईशदूत के रूप में महामद को भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व तृतीय खंड एवं तृतीय अध्याय में चित्रित किया गया है। राजा भोज का समय और महामद का समय एक ही था, क्योंकि पृथ्वी को धर्म की मर्यादा से हीन देखकर राजा भोज सिन्धु पार करके अरब जाता है । वर्णन इस प्रकार है :-

एतस्मिन्नन्तरे म्लेच्छ आचार्येण समन्वितः ।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः ।।
नृपश्चैव महादेवं मरूस्थलनिवासिनम ।
गंगाजलैश्च संस्नाप्ष्य पन्चगव्यसमन्वितैः ।।
चन्दनादिभिरभ्यर्च्य तुष्टाव मनसा हरम ।
नमस्ते गिरिजानाथ मरूस्थलनिवासिने ।।
त्रिपुरासुरनाशाय बहुमायाप्रवर्तिने ।
म्लेच्छैर्गुप्ताय शुद्धाय सच्चिदानन्दरूपिणे ।।
त्वं मां हि किंकरं विद्धि शरणार्थमुपागतम ।

उसी बीच शिष्यों की शाखाओं से युक्त महामद नाम म्लेच्छ आचार्य वहां आते हैं। राजा भोज मरुस्थल में निवास करने वाले महादेव को गंगाजल

से स्नान कराकट पन्चगव्य से युक्त चन्दनादि से पूजकर शिव को मन से सन्तुष्ट किये — हे मरुस्थल में निवास करने वाले त्रिपुरासुरनाशक, अत्याधिक चमत्कारों को जानने वाले, म्लेच्छों से सुरक्षित शुद्ध एवं सत्य, चैतन्य एवं आनंद स्वरूप शंकर जी तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे शरण में उपस्थित अपना दास समझो।

उवाच भूपतिं प्रेम्णा मायामद विशारदः ।
तव देवो महाराज मम दासत्वमागतः ।।
ममोच्छिष्टं स भुन्जीयात् तथा तत्पश्य भो नृप ।
इति श्रुत्वा तथा दृष्टा परं विस्मयमायचौ ।
म्लेच्छधर्मे मतिश्चासीत्तस्य भूपस्य दारूणे ।

राजा भोज के पास स्थित पत्थर की मूर्ति के लिए महामद ने कहा कि वह तो मेरा जूठा खा सकता है जिसे तुम पूजते हो, ऐसा कहकर भोज को वैसे ही दिखा दिया, यह सुनकर और देखकर राजा भोज को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसकी आस्था म्लेच्छधर्म में हो गई।

रात्रौ स देवरूपश्च बहुमायाविशारदः ।
पैशाचं देहमास्थाय भोजराजं हि सोऽब्रवीत ।।
आर्य धर्मो हि ते राजन सर्वधर्मोत्तमः स्मृतः ।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारूणम।।
लिंगच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रूधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम।।
बिना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मते मम।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति।।

तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकः।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मयां कृतः।।
इत्युक्त्वा प्रययौ देवः स राजा गेहमाययौ।

रात्रि में कोई देवदूत पैशाचदेह धारण करके राजा भोज से बोला कि हे राजन यद्यपि तुम्हारा आर्य धर्म सभी धर्मो से उत्तम है, फिर भी उसी धर्म को पैशाचधर्म नाम से ईश्वर की आज्ञा से स्थापित करूंगा - खतनाकियाहुआ, चोटी से हीन, दाढ़ी रखने वाला, ऊँची बात कहने वाला या (अज़ान देने वाला) मेरा ख़ास आदमी होगा। शुद्ध पशुओं का आहार करने वाला, कुशों से जैसे संस्कार होता है, वैसा उसका मुसल से संस्कार होगा, इसी से मुसलमान जाति दूषित धर्मो पर दोष लगाएंगी, ऐसा मेरे द्वारा किया गया पैशाचधर्म होगा। यह कहकर देवता चला गया, और वह राजा घर लौटा।

'अहमद्' या 'अहमिद्' शब्द का इतना महत्व है कि ऋग्वेद मं०८, सू०६, १०, अथर्ववेद काण्ड २० सू० ११५, मं० १ तथा सामवेद १५२ वाँ तथा १५०० वाँ मन्त्र में अहमिद्' शब्द का प्रयोग है -

'अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जयभ।
अहं सूर्य इवाजनि ॥,
'अहमद' का अर्थ प्रशंसक या अभिमानकक्षक।
(भविष्य पु० प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थ अध्याय कलिकृतविष्णुस्तुतिः)

मैने ही रक्षक और प्रकृति के नियम को चलाने वाले परमेश्वर से तत्वदर्शिता प्राप्त की है। मै सूर्य के समान प्रकाशित हुआ हूं।' एतदातिरिक्त 'अल्ला' या अल्ला' शब्द ऋग्वेद मं० ९, सू० ६७ मं० ३० में 'अलाय्यास्य परसुर्ननाश' तथा ऋग्वेद मं० ३, सू० ३०, मं० १० में 'अल्लदृणों वल इन्द्र ब्रज़ों गोः पुरा हन्तोर्भयमानो व्यार' के रुप में प्राप्त होता है।

सार्वभौमधर्म एवं उपसंहार

१. हाथ में रखे हुए बेर के समान स- ूर्ण ब्रह्माण्ड को देखने वाले परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करना सभी धर्मो क. मूलाधार है । कोई भी धर्म परमेश्वर की सत्ता को अस्वीकार नही कर सकता ।

२. उस परमेश्वर को प्रसन्न करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। उस परमेश्वर की बनाई हुई सृष्टि मे किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना,सत्य बोलना, दान देना, किये गये उपकार को मानना, निर्धनों की सेवा करना, धर्मो का आदर करना प्रत्येक धर्म का सिद्धान्त है ।

३. धर्म के नाम पर होने वाले वाह्याडम्बरों का निराकरण करके, धर्म के सत्य स्वरूप को लोगों के सम्मुख रखना चाहिए ।

४. जो जिसको भजते है, वे उसी को प्राप्त करते है एक परमेश्वर को छोड़कर, अन्य देवी देवताओं के भक्त अधोगति पाते है उसको नही पाते ।

५. एक ही परमात्मा है, उसके अलावा दूसरा कोई ई ही नहीं जिसकी स्तुति की जाय।

६. प्रतिदिन परमेश्वर का ध्यान, भजन तथा नियमानुसार किसी व्रत को एक निष्ट होकर रहना चाहिये ।

७. सभी से नम्रतापूर्वक बोलना, किसी का दिल न दुखाना, अच्छा आचरण, हृदय की सफ़ाई एवं निर्मल भावनाओं का होना आवश्यक है ।

८.अच्छे मार्ग चलने से कोई आसुरी शक्ति मनुष्य को भटका देती है, अतः अच्छे

कार्य में बाधाओं के उपस्थित होने पर भी अच्छे कार्य का परित्याग नहीं करना चाहिए ।

९. परमेश्वर की अनन्य भक्ति करनी चाहिए । परमेश्वर की पूजा में उसकी तुलना में किसी अन्य को नहीं रखना चाहिए ।

धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों का अवलोकन करने पर यह स्वतः सिद्ध होता है, कि वैदिक ईसाई एवं इस्लाम धर्म के मूल रूप में वैषम्य नहीं है, अपितु परवर्ती धर्मोपदेशकों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ मिश्रण कर लिया है । इससे वास्तविक धर्म का स्वरूप अदृश्य हो गया है। धर्मों में भरी हुई बुराइयों एवं धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों का दूरीकरण तभी है, जबकि प्रत्येक मनुष्य को यह ज्ञान हो जाय, कि वे सभी एक ही परमेश्वर द्वारा बनाए गये एक ही माता - पिता (आदम व हव्यवती) की सन्तान हैं । जब सभी धर्मानुयायियों का परमेश्वर एक है, मानवसृष्टि का आदि पुरूष एक है, बनावट एक है, क्रियाकलाप एक जैसे ही हैं, मानवजाति में स्त्री जाति तथा पुरूष जाति की रचना समान है, तो एक ही माता पिता की सन्तानें आपस में धर्म के तथ्य को न समझाते हुए पारस्परिक कलह धर्म के नाम पर करें, यह क्या परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली बात होगी । अतः सब को प्रेम एवं सद्भावना से रहना चाहिए ।